

An archival image of the Machchi Pol

Jaipur was the last capital of Dhoondhar, the kingdom of the Kachchwaha Rajputs and is situated in the plains at the edges of the Aravalli range, which formed a part of the legendary Matsyadesh of the Mahabharata. Duleh Rai laid the foundation of Dhoondhar kingdom in 966 CE and entered the Machi area through the hilly terrain known as Purana Ghat. Down the valley line in the Purana Ghat area, one can see the Ghat Ki Guni complex which had a great role to play in the history of the Dhoondhar state and served as a gateway to the Dhoondhar kingdom for centuries. During the period of Raja Man Singh, Ghat Ki Guni was merely a paved cobblestone path and it is said that many structures were constructed in the area to display the grandeur of Amber State to the Mughal Emperor. With the founding of Jaipur in 1727AD, a new architectural spirit was revived that could be seen by the addition of many gardens, palaces and havelis which were added to Ghat Ki Guni. The complex still has an impressive conglomeration of fifty-two unique properties of great architectural and historical significance. The Ghat Ki Guni complex constitutes a valuable inheritance to a vibrant town like Jaipur conveying the unique historical and cultural character of its natural and built environment and as a symbol of the culture of urban Rajasthan.



Department of Archaeology and Museums Government of Rajasthan





Rajasthan Chapter



IHCN-F, Rajasthan Chapter Chief Town Planner's Office, JLN Marg, Jaipur -302004, Tel. :91-98281 96477 Email : info@ihcn.in,Website : www.ihcn.in



Diggi House Shivaji Marg, C-scheme Jaipur-302004 Tel.: 91-141-2369723/2369823 E-mail: info@jaipurvirasatfoundation.org



Development and Research Organisation for Nature, Arts and Heritage

A-258, South City-I, Gurgaon-122 001 Phone: 91-(0)124-4082081, 2381067, Fax: 91-(0)124-4269081 Email: dronah@gmail.com, Website: www.dronah.org











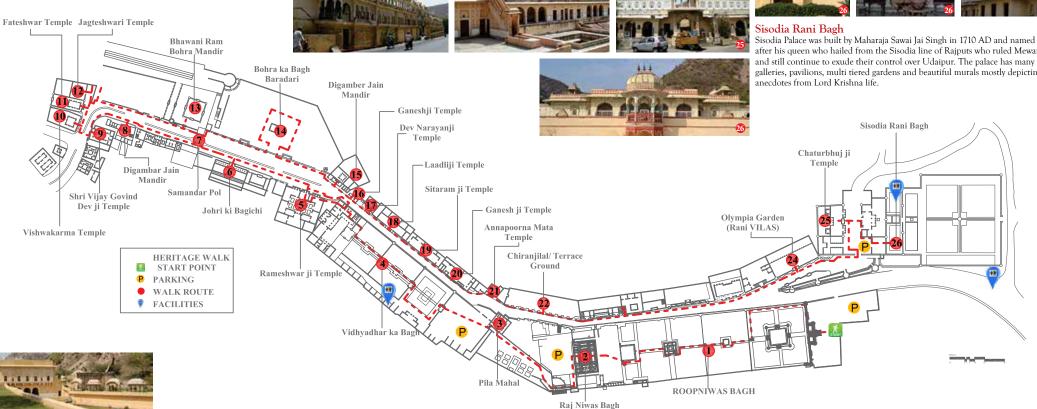








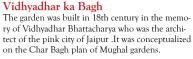
after his gueen who hailed from the Sisodia line of Rajputs who ruled Mewar and still continue to exude their control over Udaipur. The palace has many galleries, pavilions, multi tiered gardens and beautiful murals mostly depicting













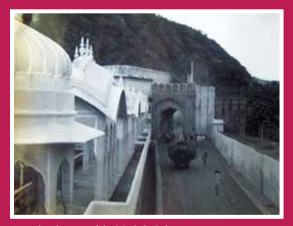






### Roop Niwas Bagh

Roop Niwas Bagh was constructed by Roopan Badaran in 1829 AD who was the favourite maid of Maaji Bhattiyani, wife of Sawai Jagat Singh - III.



An archival image of the Machchi Pol

कछवाहा राजपूतों के साम्राज्य, ढूंढार की अंतिम राजधानी जयपुर था, जों कि अरावली पर्वत श्रृंखला के समतल क्षेत्र के सिरे में बसा हुआ है और महाभारत में उल्लेखित पौराणिक मत्स्य देश का अंश था। ढूंढार राज्य की स्थापना दुल्हे राय ने ६६६ वर्ष पहले (966 C.E) की थी और वह माछी इलाके के पर्वती भूभाग में स्थित पुराने घाट के रास्ते से जयपुर आये थे। पुराने घाट के दर्रे की सीमा की नीचे, घाट की गुनी संकुल दिखाई पड़ता हैं, जिसने ढूंढार देश के इतिहास में एक मुख्य किरदार निभाया हैं। घाट की गुनी सदियों से ढूंढार राष्ट्र का प्रमुख द्वार बना हुआ हैं। राजा मानसिंह के शासन काल के दौरान, घाट की गुनी महज एक प्रश्स्त पत्थर का मार्ग था और यह माना जाता है कि इस क्षेत्र में मुग़ल सम्राट को आमेर राज्य की भव्यता प्रदर्शित करने हेतू कई ढाँचों की सरंचना की गई। सन् १७२७ ईसा पश्चात् (1727 A.D) में, जयपुर की स्थापना से एक नई वस्तुशिल्पीय विचारधारा पुर्नजीवित हुई, जो कि घाट की गुनी में अतिरिक्त बने बगीचों, महलों और हवेलियों में देखी जा सकती है। घाट की गुनी समूह पूरे ५२ प्रभावशाली सम्पत्तियों का संगुटीकरण है जो स्थापत्य कला व ऐतिहासिक प्रतिष्ठा का प्रतीक है। घाट की गुनी की सरंचना का योगदान अनुनादी जयपुर नगर की अमूल्य धरोहर में गठित हैं और यह प्राकृतिक एवं रचित परिवेश की अनुठी ऐतिहासिक व सांस्कृतिक चरित्र का हस्तान्तरण कराता हैं। घाट की गुनी शहरी राजस्थान की सभ्यता का अनुरूप हैं।



Department of Archaeology and Museums Government of Rajasthan





Rajasthan Chapter



IHCN-F, Rajasthan Chapter Chief Town Planner's Office, JLN Marg, Jaipur -302004, Tel. :91-98291 96477 Email : info@ihcn.in,Website : www.ihcn.in



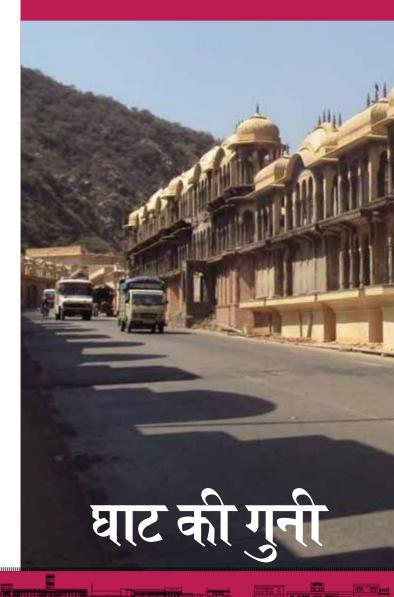
Diggi House Shivaji Marg, C-scheme Jaipur-302004 Tel.: 91-141-2369723/2369823 E-mail: info@jaipurvirasatfoundation.org



Development and Research Organisation for Nature, Arts and Heritage

A-258, South City-I, Gurgaon-122 001 Phone: 91-(0)124-4082081, 2381067, Fax: 91-(0)124-4269081 Email: dronah@gmail.com, Website: www.dronah.org

# हेरिटेज् वॉक्

















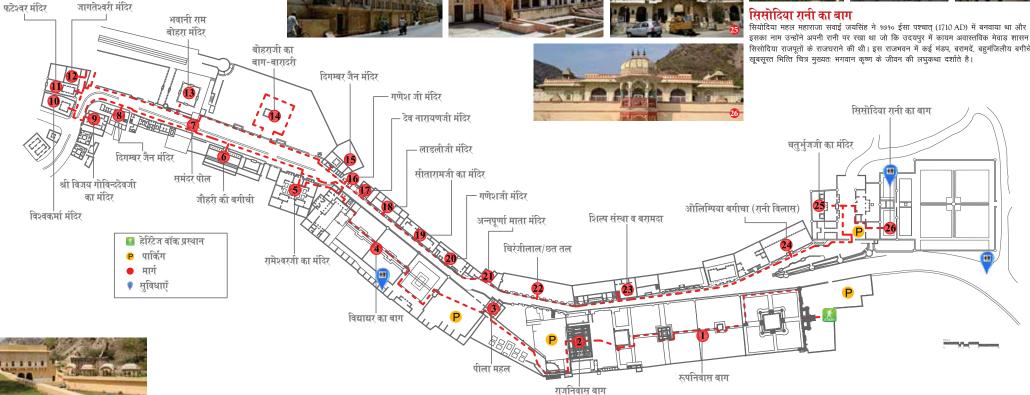








इसका नाम उन्होंने अपनी रानी पर रखा था जो कि उदयपुर में कायम अवास्तविक मेवाड़ शासन के सिसोदिया राजपूतों के राजघराने की थी। इस राजभवन में कई मंडप, बरामदें, बहुमंजिलीय बगीचे व





















## विद्याद्यर का बाग

इस बगीचे को १८०० शताब्दी (18th Century) में विद्याद्यर भद्वाचार्या, जो जयपुर के गुलाबी नगर के वास्तुविद थे, की याद में बनवाया था। विद्याद्यर के बाग की संकल्पना मुगल बगीचों के चार-बाग नक ो के अनुसार थी।

# राजनिवास बाग

राजनिवास बाग में एक महल, पानी के टांके और कोठे पर बने बगीचें हैं, जो प्रमुख रूप से सवाई राम सिंह द्वितीय काम मे लेते थे। वह अपनी गर्मीयाँ राजकीय भागदौड़ से दूर राजनिवास बाग में पुनर्यूवीकरण के लिए बिताते थें। टांको का पानी मार्ग के दोनों तरफ बहता था जो घाट को ग्री म ऋतु के गरम महिनो में ीतल व हरा-भरा रखने में

### रूपनिवास बाग

रूपनिवास बाग रूपा बंधारन जो कि माजी साहब भाटियानी जी, सवाई जगतसिंह तृतीय की पत्नी की खास दासी थी, ने १८२६ ईसा प चात् (1829 A.D) में बनवाया था।